ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६४
दिनांक- शुक्रवार, ११ सितम्बर, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३०.५ एवं २५.० डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ८७ प्रतिशत, हवा की औसत गति ८.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.९ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ४.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ३०.२ एवं दोपहर में ३४.२ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में २४.८ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१२-१६ सितम्बर, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १२-१६ सितम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में हल्की-हल्की वर्षा की सम्भावना बनी रहेगी। इस दौरान कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी हो सकती है। हालाँकि पूर्वानुमानित अवधि के ज्यादातर समय मौसम शुष्क रह सकता है। पूरे पूर्वानुमानित की अवधि में आसमान में मध्यम बादल छाये रह सकते है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३१ से ३५ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २४-२७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पुरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ७-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ५० से ६० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- वर्तमान मौसम परिस्थितकी सब्जियों की पौधशाला में आद्रगलन (डेम्पिग ऑफ) रोग के विस्तार के लिए अनुकूल है। यह एक कवक द्वारा फैलने वाला मृदा जनित रोग है, जिसमें पौधशाला के नवजात अंकुरित पौध के तने जड़ के ऊपर भूमि के पास से सड़ जाते है और पौध मर जाते है। रोग की तीव्रता की स्थिती में रोग ग्रस्त पौध क्यारीयों में गुच्छों में दिखता है। कभी-कभी पूरा नर्सरी नष्ट हो जाता है। इस रोग से वचाव हेतु ट्राइकोडरमा से मृदा उपचार कर उपचारीत बीज की बुआई करें। सघन बीज नहीं गिरावें, अधिक गहराई में बीज की बुआई नहीं करे। जल निकास की उचित व्यवस्था रखें। पौधशाला में रोग की विस्तार की स्थिती में कॉपर आक्सीक्लोराइड २.५ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- फूलगोभी की पूसा अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काशी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोवॉल आदि किस्मों की रोपाई करे। अगात फूलगोभी में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे एवं प्रकोप दिखाई देने पर वचाव हेतु स्पेनोसेड दवा एक मि०ली० प्रति ४ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें।
- उरद् और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। मिर्च के खेत में विषाणु रोग (पत्तियों का टेढ़ा-मेढ़ा होना) से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दे। तदुपरांत इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर घोल बनाकर छिड़काव करें। अगात फूलगोभी में निकाई-गुड़ाई करें।
- बैगन की तैयार पौध की रोपाई करें। रोपनी से पहले १ ग्राम फ्युराडान ३ जी० दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला कर रोपनी करें।
- स्वस्थ एवं सुडौल आकार वाली सब्जियों के उत्पादन के लिए किसान भाई ट्राइकोडरमा खाद से मृदा उपचार कर सब्जियों की रोपाई करें। मिर्च, बैगन, टमाटर की फसलों एवं नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है जिससे पौध के पत्ते टेढ़े-मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते है। यह बड़ी तेजी से एक-पौधें से दूसरे पौधे में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल में गंधी बग कीट की निगराणी करे। इसके शिशु एवं पौढ़ दोनों शुरुआत में कोमल पत्तियों एवं तनों का रस चुसकर पौधें को कमजोर बना देती है। बालियाँ निकलने तथा दुध भरने की अवस्था में यह दाने को चुसकर खोखला एवं हल्की बना देती है, जिससे उपज काफी प्रभावित होता है। इस समय यह पौधे को अधिक क्षति पहुचाती है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकि वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसके नियंत्रण के लिए फॉलीडाल १० प्रतिशत धूल का प्रति हेक्टेयर १०-१५ किलोग्राम की दर से भूरकाव ८ बजे सुबह से पहले अथवा ५ बजे शाम के बाद बालियों पर करें। किसान भाई खड़ी फसलों में दवा का छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें।
- पिछात बोयी गई धान की फसल जो कल्ले बनने की अवस्था में हो, में ३० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। कहीं-कहीं अगात बोयी गई धान की फसल जो बाली निकलने की अवस्था में आ गई हो, में ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।
- उचॉस जमीन में सितम्बर अरहर की बुआई १५ सितम्बर तक संपन्न करें। इसके लिए पूसा-९ तथा शरद प्रभेद अनुसंशित है। सब्जियों की फसल फुल गोभी, मिर्च, बैगन एवं प्याज में निकाई-गुड़ाई करें।
- दूधारू पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा (५०:५०) के अनुपात में खिलायें तथा २०-३० ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुघर के आस-पास मच्छर, मक्खी और कीड़े पनपने से रोकने के लिए चूना का छिड़काव करें। मवेशियों को संक्रामक रोगों से बचाने के लिए पशु चिकित्सक की सलाह से टीकाकरण करावें।

आज का अधिकतम तापमानः ३३.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.८ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः २४.३ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.९ डिग्री कम

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी